18

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में राजभाषा के बढ़ते चरण

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में वर्ष-दर-वर्ष हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में अभिवृद्धि हो रही है। अत्यन्त ही हर्ष के साथ यह उल्लेख करते हुए गर्व हो रहा है कि संस्थान में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों में से लगभग सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है। कहना अनुचित न होगा कि संस्थान का समस्त प्रशासनिक कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में और यथा आवश्यक द्विभाषी रूप में ही हो रहा है। संस्थान में हो रहा हिन्दी का प्रयोग केवल अनुवाद पर ही आधारित नहीं है अपितु अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी में मूल लेखन कर रहे हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए परिषद मुख्यालय द्वारा चलाई जा रही "राजर्षि टण्डन राजभाषा पुरस्कार योजना" के अन्तर्गत वर्ष 2003-04 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले बड़े संस्थानों में से भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान को द्वितीय पुरस्कार के लिए चुना गया। यह पुरस्कार 24 दिसम्बर, 2004 को परिषद द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में संसदीय राजभाषा समिति की उपाध्यक्षा, श्रीमती सरला माहेश्वरी द्वारा प्रदान किया गया।

प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं। उनमें लिए गए

मुख्य अतिथि से वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिये पुरस्कार ग्रहण करते हुए एक विद्यार्थी।

निर्णयों पर कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए पहले से ही संस्थान में गठित राजभाषा निरीक्षण समिति द्वारा हर तिमाही में निरीक्षण किया गया। इस समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन पर निगरानी रखी जाती है। स्थिति के अनुसार समिति द्वारा अपने सुझाव एवं सिफारिशें निदेशक महोदय के समक्ष प्रस्तुत की गईं तथा निदेशक महोदय द्वारा दिये गये आदेशों को विभिन्न प्रभागों/अनुभागों में प्रचारित किया गया।

प्रतिवेदनाधीन वर्ष के अन्तर्गत, संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों, सहायक प्रशासनिक अधिकारियों तथा सहायकों और वरिष्ठ एवं कनिष्ठ लिपिकों के लिए चार कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें वैज्ञानिक/तकनीकी विषयों पर, मूल रूप से हिन्दी में शोध एवं लोकप्रिय लेखों के लेखन के गुर, वैज्ञानिक सामग्री के अनुवाद की समस्या, भा.कृ.अ.प./भारत सरकार द्वारा चलाई गई हिन्दी पुरस्कार योजनाओं की जानकारी, हिन्दी में कार्य करने की सांविधानिक अनिवार्यताएं, राजभाषा अधिनियम एवं नियम, हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट एवं निरीक्षण प्रश्नावली भरने, हिन्दी में मूल पत्राचार लेखन, वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन के सिद्धान्त, परिषद में हिन्दी लेखों के प्रकाशन संबंधी जानकारी इत्यादि विषयों पर संस्थान के बाहर से आमंत्रित व्याख्याताओं द्वारा व्याख्यान दिये गए। इसके अतिरिक्त, संस्थान द्वारा समय-समय पर खरीदे जा रहे बहुभाषी सॉफ्टवेयरों पर हिन्दी में काम करने की जानकारी देने के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए।

संस्थान में कार्यरत सभी हिन्दीतर भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण पूरा किया जा चुका है। आज तक की स्थिति के अनुसार संस्थान में अब कोई ऐसा हिन्दीतर भाषी अधिकारी/कर्मचारी शेष नहीं रह गया है जिसे हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाना शेष हो। इसके अलावा, हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत संस्थान में हिन्दी आशुलिपि के प्रशिक्षण के लिये शेष बचे एक आशुलिपिक द्वारा जुलाई, 2005 में आयोजित हिन्दी आशुलिपि की परीक्षा दी जाएगी तथा सभी कार्यरत अवर लिपिकों द्वारा हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण पहले ही पूरा कर लिया गया है।

संस्थान में वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को पूरा करते हुए संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपनी ओर से लिखे जाने वाले सभी पत्र तो हिन्दी अथवा द्विभाषी रूप में ही लिखे गये साथ ही, "क" तथा "ख" क्षेत्रों से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर तथा "क" तथा "ख" क्षेत्रों की राज्य सरकारों एवं उनके कार्यालयों और गैर-सरकारी व्यक्तियों के साथ भी पत्राचार शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा अपेक्षानुसार द्विभाषी रूप में ही किया गया। संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिक प्रभागों तथा प्रशासनिक अनुभागों द्वारा आयोजित की जाने वाली बैठकों की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में ज़ारी किए गए।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा ज़ारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिये सात अनुभागों को विनिर्दिष्ट करने का लक्ष्य तो संस्थान द्वारा पहले ही से प्राप्त कर लिया गया है। फिर भी, हमारे संस्थान में अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिये दस अनुभाग पहले से ही विनिर्दिष्ट हैं।

संस्थान में इस वर्ष दो बहुभाषी सॉफ्टवेयर, आई.एस.एम.-2000 तथा ए.पी.एस.-2000++ खरीदे गये हैं ताकि सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मी अपना दैनिक कामकाज कम्प्यूटर पर हिन्दी में सरलता से कर सकें। इन दोनों सॉफ्टवेयरों पर हिन्दी में काम करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाएं चलाई गईं। इन दोनों कार्यशालाओं में लगभग 40 अधिकारियों/कर्मचारियों को उक्त सॉफ्टवेयर पर काम करने का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इन दोंनों ही सॉफ्टवेयरों में ऐसी सुविधा है कि वे व्यक्ति भी हिन्दी में काम कर सकते हैं जो टाईपिंग नहीं जानते।

संस्थान की वर्ष 2003-04 की वार्षिक रिपोर्ट इस बार भी हिन्दी और अंग्रेजी, अर्थात् डिग्लाट फोर्म में प्रकाशित की गई, जिसका संस्थान के वार्षिक दिवस समारोह के अवसर पर विमोचन हुआ। संस्थान की वेबसाइट (हिन्दी में) को समय-समय पर अद्यतन किया गया, साथ ही

हिन्दी चेतनामास के दौरान निदेशक महोदय ज्योति प्रज्वलित करते हुए

संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध "हिन्दी-सेवा लिंक" में भी वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रशासनिक शब्दावली में सामग्री जोड़ी गई।

प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्र, परियोजना प्रस्ताव तथा सेमिनार हिन्दी में प्रस्तुत किए। वैज्ञानिकों द्वारा अपनी परियोजना रिपोर्टों के सारांश भी द्विभाषी रूप में प्रस्तुत किए गये। संस्थान द्वारा किए जाने वाले सर्वेक्षणों की प्रश्नावलियां/प्रपत्र भी द्विभाषी तैयार किए गए।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा ज़ारी तथा परिचालित विभिन्न नकद पुरस्कार योजनाएं संस्थान में लागू हैं। संस्थान के कर्मियों ने इन योजनाओं में हिस्सा लिया। विजेता प्रतियोगियों को ये पुरस्कार दिनांक 01 अक्तूबर, 2004 को हिन्दी चेतनामास के समापन समारोह के अवसर पर हुए पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किए गए।

हर वर्ष की भांति, इस वर्ष भी संस्थान में दिनांक 01 सितम्बर से 01 अक्तूबर, 2004 के दौरान हिन्दी चेतनामास का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं/कार्यक्रम आयोजित किए गए। सदैव की भांति इस वर्ष के आयोजन के प्रमुख एवं लोकप्रिय कार्यक्रम थे - काव्य पाठ, अन्ताक्षरी, वाद-विवाद, प्रश्नमंच, इत्यादि। इसके अलावा, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिन्दी टंकण एवं हिन्दी आशुलिपि तथा हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता भी की गईं जिनमें संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों/छात्रों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। हिन्दी चेतनामास के दौरान इस वर्ष भी हिन्दी दिवस पर डा. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया जिसमें कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल के अध्यक्ष, डा. अमर सिंह फरोदा द्वारा "कृषि में सांख्यिकी का महत्व" विषय पर व्याख्यान दिया गया।

इस वर्ष हिन्दी चेतनामास में "शोध-पत्र पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता" वैज्ञानिकों तथा तकनीकी कर्मियों के लिये विशेष आकर्षण रही। यह प्रतियोगिता इसी वर्ष से आरम्भ की गई। इसमें संस्थान के वैज्ञानिकों तथा तकनीकी कर्मियों ने अपने-अपने 11 शोध-पत्र पोस्टर प्रदर्शित किए जिसमें से सर्वश्रेष्ठ तीन शोध-पत्रों को पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 01 अक्तूबर, 2004 को चेतनामास का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे श्री बालस्वरूप राही, वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व सचिव, भारतीय ज्ञानपीठ। हिन्दी चेतनामास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों को हिन्दी चेतनामास के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। समारोह के अन्त में श्री राही जी ने अपने संबोधन में संस्थान में हो रहे हिन्दी के प्रयोग की विशेष रूप से सराहना की और कहा कि इस उपलब्धि से हिन्दी में हो रहे विशेषकर मूल रूप से शत-प्रतिशत प्रशासनिक कार्य का व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिये ताकि इस संस्थान से अन्य संस्थानों के अधिकारियों/कर्मचारियों को भी प्रेरणा मिल सके और वे भी अपने यहां मूल रूप में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग शुरू कर सकें।